पलायन के कारण बन्द होता टेनरी का उद्योग भी है। चीनियों का मुख्य व्यापर टेनरी का कारोबार ही था, लेकिन बढ़ती प्रतिद्वन्द्विता और नई पीढ़ी के भारत से मोहभंग के कारण चीनियों की आबादी संकट में दिखाई पड़ी। अम्मार के मन में फिल्मों देखी चीनी फूड स्ट्रीट की कल्पना थी, लेकिन वह जब नहीं दिखी तो उन्होंने भी वापसी के लिए उतावली दिखाई। रास्ते में संतोष जी ने एक मिठाई की दुकान पर गाड़ी रोकी। असल में हम लोगों की योजना थी कि वहीं से घर के लिए रशोगुल्ले ले लेंगे। दुकान पर भीड़ थी। पता चला कि अब रशोगुल्ले खत्म होने वाले हैं। पैकिंग के लिए मैंने बात की तो दुकानदार ने बताया कि मुश्किल से दो दिन ही चलेंगे। हमारी यात्रा का समय ही दो दिन का था। अगले दिन रात में निकलना था। संदेश के बारे में बताया कि यह दस-पन्द्रह दिन चल जाता है। हमने संदेश पैक करवाये। वहाँ से विक्टोरिया मेमोरियल का रास्ता पकड़ा। हालांकि हमें यह पता था कि विक्टोरिया मेमोरियल शाम में ही बन्द हो जाता है, लेकिन कल देखकर आये सभी लोगों ने वहाँ के प्रकाश सज्जा की बड़ी तारीफ की थी। पूजा के कारण तो पूरा कोलकाता ही विविध रंगों और रूपों के साथ सजा था, मार्ग की सजावट को निहारते हम वहाँ पहुँचे। बदलते हुए बिजली के कुमकुमों की शोभा के संदर्भ में कहना अतिशयोक्ति न होगी कि अगर होगा तो कदाचित स्वर्गीय सौन्दर्य वैसा ही होगा जैसा वहाँ का नजारा था, लेकिन पार्किंग की माकूल व्यवस्था न होने के कारण हम वहां बहुत देर तक रुक नहीं पाये। रात के लगभग साढ़े आठ बजे गये थे। हम लोग वापस स्वास्तिक गार्डन आ गये।

सब थककर चूर हो गये थे, लेकिन संतोष जी की मेहरबानियों से जितना संभव हो सकता था हम लोगों ने देख लिया। रह गयी इमारतों में नकोदा मस्जिद, जैन मंदिर, बेलूर मठ, दक्षिणेश्वर मंदिर, कालीघाट का काली मंदिर, बिड़ला मंदिर, शहीद मीनार, नेशनल म्यूजियम, एशियाटिक सोसाइटी, ठाकुरबाड़ी, फोर्ट विलियम, मार्बल पैलेस इत्यादि देखने के लिए दिनों के बजाय सप्ताह की दरकार होती है। अगली यात्रा के लिए इन स्थानों को छोड़ कल यानी यात्रा के अन्तिम दिन नेशनल लाइब्रेरी जाने कार्यक्रम था। असल में उसी दिन हमारी वापसी की ट्रेन थी। यात्रा लम्बी थी। समीरा और उनकी बहन की योजना वापसी में तैयारी की थी। विशेषरूप से खाने की। असल में पता यह चला कि वापसी वाली गाड़ी में खानपान की व्यवस्था नहीं है। अम्मार जरूर तैयार थे। अशार अपनी गोल के लोगों के साथ घूमकर थक गये थे। उनका इरादा भी आराम का था। अगले दिन हम लोग नेशनल लाइब्रेरी के लिए निकले। देश के बड़े पुस्तकालयों में शुमार नेशनल लाइब्रेरी में मैं पहले जा ही चुका था। इस यात्रा में हमें मुंशी नवलकिशोर पर भारत सरकार के सूचना प्रसारण मन्त्रालय से प्रकाशित एक पुस्तक की तलाश थी। हम लोग पहुंचे तो पता चला कि बच्चों के लिए एक अलग विभाग है। अम्मार को वहाँ भेजकर मैं लाइब्रेरी में चला गया। उर्दूविभाग में अलीगेरियन उस्मान साहब से मुलाकात हुई। बहुत प्रयत्न के बाद भी वह पुस्तक नहीं मिल पायी। अम्मार को लाइब्रेरी ने बहुत प्रभावित किया। बच्चों के लिए वहाँ नायाब अध्ययन सामग्री थी। कॉमिक्स टिन-टिन की आरम्भिक प्रतियाँ भी मिल गयीं। इन्साइक्लोपीडिया में थ्री डी तस्वीरें थीं। वह तो वहाँ के दीवाने हो चुके थे। उनको इस बात का अफसोस था कि उनकी पढ़ाकू नानी साथ आयीं क्यों नहीं।

लाइब्रेरी से निकलकर हम लोगों ने थोड़ी दूर पैदल यात्रा करके वहीं जाकर खाना खाया जहां पहली यात्रा में खाते थे। खाने के बाद पड़ोस की दुकान से रसमलाई ली गयी। खा-पीकर हम वापस टैक्सी से समीरा की बहन के यहाँ आ गये। तैयारियाँ समाप्ति पर थीं। मैंने महसूस किया कि हमारे मेजबान शकील भाई, समीरा की बहन जाजिब, ऐमन, अरीबा सभी उदास थे। असल में ये लोग घर के मुखिया की मृत्यु के बाद एक भरे पूरे परिवार से इस फ्लैट में रहने आये थे। पारिवारिक विवाद के कारण शकील भाई के परिवार में दूसरे भाइयों से संबन्ध अच्छे नहीं थे। वह परिवार में सबसे बड़े थे। समीरा की बहन का परिवार में बड़ा मान था। उन्होंने परिवार को संवारा था। शकील भाई थोड़े सीधे हैं, इसलिए परिवार के लोग उनको जायदाद में उनका मुनासिब हिस्सा नहीं देना चाहते हैं। आपसी विवाद के कारण लोगों का मिलना-जुलना बन्द हो गया था। इधर उनकी बहन के घर से लोग कम ही आते। एक तरह से लोग खुद को अकेला महसूस करते। हम लोगों के वहाँ पहुँचने के बाद अपनी तमाम समस्याओं को हम लोगों से बाँट लेने के बाद उन लोगों का दुख कुछ गलता-सा दिखा। मैंने महसूस किया। बच्चों को उनके हमउम्र साथी मिल गये। फिर तो क्या कहने! मध्यवर्गीय नगरीय परिवार की जीवनशैली में जीने वाले बच्चों की प्रसन्नता का अनुमान उस वर्ग का कोई भी लगा सकता है। बिदाई के समय की रुदन की बड़ी ही स्वाभाविक प्रक्रिया के साथ हम लोग कलकत्ता स्टेशन के लिए निकले। घर पर केवल समीरा की बहन कुमकुम बाजी ही रह गयी थीं। हम लोग समय से स्टेशन पहुँच गये। वह लोग लगभग एक घंटे हमारे साथ रहे। एक बार फिर सब नम आँखों के साथ अपनी-अपनी राहों की तरफ निकले। ■